

पेंटिंग ब्रश बनाने के लिये नेवलों का शिकार

संदर्भ

एक तरफ जहाँ हाथियों के अवैध शिकार, एक सींग वाले गैंडों तथा पैंगोलिन के साथ-साथ बाघों की मौत पर आम तौर पर तीखी प्रतिक्रियाएँ देखी गईं, वहीं हज़ारों नेवलों (mongoose) की हत्या पर किसी ने भी बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया।

हालिया घटनाक्रम

- 30 सितंबर, 2018 को वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो (Wildlife Crime Control Bureau-WCCB) और उत्तर प्रदेश राज्य के वन विभाग के अधिकारियों ने यूपी के बज़िनौर ज़िले के शेरकोट गाँव में घरों और कारखानों पर छापा मारा और वहाँ से से 155 किलोग्राम नेवले के बाल और 56,000 ब्रश ज़ब्त किये गए। यह देश में अपनी तरह की सबसे बड़ी ज़बती थी और अधिकारियों द्वारा लगाए गए अनुमान के अनुसार, इतने बाल इकट्ठा करने के लिये कम-से-कम 3,000 जानवरों को मारा गया होगा।
- इसके कुछ समय बाद 10 दिसंबर, 2018 को WCCB के अधिकारियों ने दलिली स्थिति वाइल्डलाइफ़ ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया (Wildlife Trust of India-WTI) के साथ समन्वय करते हुए देश भर में 13 स्थानों पर एक साथ छापे मारे और हज़ारों की संख्या में नेवले के बालों से बने ब्रश ज़ब्त किये गए। WCCB द्वारा पछिले दो वर्षों में अवैध व्यापार पर की गई यह 27वीं कार्रवाई थी।

चिता का कारण

- इन सभी छापों के बावजूद भी प्रमुख भारतीय शहरों में किसी भी दुकान पर नेवले के बालों से ब्रश आसानी से मिल सकते हैं। इन जानवरों के लिये सबसे बड़ा खतरा इस व्यापार हेतु ही इनहें मारा जाना है।
- हालाँकि अन्य विकल्प भी उपलब्ध हैं लेकिन बालों की अच्छी गुणवत्ता, स्थायित्व और भुरभुरापन (brittleness) ने इन जानवरों को खतरे में डाल दिया है।
- ब्रश की संवेदनशीलता, महीन परष्करण और पेंट को अवशोषित करने की इसकी क्षमता के कारण कई कलाकार इसे अधिक प्राथमिकता देते हैं क्योंकि सिथेटिक ब्रश में इसके समान गुण नहीं होते हैं।
- पहले इन ब्रशों का निर्माण कई प्रतिष्ठित ब्रश निर्माताओं द्वारा किया जाता था। लेकिन 2000 के दशक की शुरुआत में इसके व्यापार की अवैध प्रकृति सामने आने के बाद प्रमुख निर्माताओं ने इसका निर्माण कार्य बंद कर दिया। फरि भी खरीदारों की मांग के चलते छोटे निर्माता नेवले के बाल से बने ब्रश का उत्पादन करते रहे।

नेवला (mongoose)

- नेवला छोटा माँसाहारी स्तनधारी है इसका शरीर लंबा तथा भूरे रंग का होता है।
- भारत में यह व्यापक रूप से ग्रामीण इलाकों, कृषि भूमि और वन क्षेत्रों में पाया जाता है।
- इनका शिकार करने वाले पारंपरिक समुदायों में तमलिनाडु के नारकिरुवास, कर्नाटक के हक्की पक्की, आंध्र और कर्नाटक में गोंड तथा मध्य एवं उत्तर भारत में गुलिया, सपेरा और नाथ शामिल हैं।
- नेवलों को वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के भाग 2 (अनुसूची 2) के तहत सूचीबद्ध किया गया है तथा उनका शिकार, अधिकार और व्यापार करना अपराध है साथ ही दंड के रूप में सात साल तक के कारावास का प्रावधान भी है।
- वन्यजीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर अभिसमय (Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora-CITES) द्वारा संरक्षित है।
- देश भर में इसकी छह अलग-अलग प्रजातियाँ पाई जाती हैं:

1. भारतीय भूरा नेवला (Indian grey mongoose)
2. छोटा भारतीय नेवला (Small Indian mongoose)
3. लाल सरिवाला नेवला (Ruddy mongoose)
4. केंकड़ा खाने वाला नेवला (Crab-eating mongoose)
5. धारीदार गले वाला नेवला (Stripe-necked mongoose)
6. ब्राउन नेवला (Brown mongoose)

- भारतीय भूरा नेवला प्रजाति सबसे अधिकि पाई जाने वाली जाती है और सबसे अधिकि शिकार भी इसी प्रजाति का होता है ।

नेवलों की दुर्दशा के बारे में लोगों को जागरूक करना आवश्यक

- इसके बालों की कीमत लगभग 3000-5000 रुपए प्रति किलो के बीच होती है और एक कलोग्राम बाल संग्रह करने के लिये 50 जानवरों की हत्या की जाती है । प्रत्येक नेवले से लगभग 40 ग्राम बाल प्राप्त होते हैं जसिमें से केवल 20 ग्राम का उपयोग ब्रश बनाने के लिये कया जा सकता है ।
- कलाकारों और आम जनता को यह सूचित किये जाने की जरूरत है कि नेवले के बालों से बने ब्रश का उपयोग करना बंद करें क्योंकि अब तक इसके बालों से नरिमति ब्रशों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है और यह चर्ता का एक बड़ा कारण है ।

स्रोत : हदुस्तान टाइम्स

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/preying-on-mongoose>

